# "वियतनाम का राजनीतिक इतिहास"

**Mandip Kumar Chaurasiya**

**Assistant professor(Guest)**

Dept. Of A.I.H. & Archaeology

Patna University,Patna-800005

**M.A. Semester-II**

**Paper/CC – (6) Political History of South-East Asia**

दक्षिण-पूर्व एशिया के इतिहास में वियतनाम के राजनीतिक इतिहास का बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान है। वर्तमान समय में जो प्रदेश दक्षिणी वियतनाम का राज्य कहलाते है, प्राय: वे ही राज्य प्राचीन काल में चम्पा के हिन्दु या भारतीय राज्य के अंतर्गत थे। वियतनाम में अनेक राजाओ ने शासन किया परन्तु मुख्य रूप से यहाँ के क्षेत्रो में चंपा का राज्य और उसका राजनीतिक इतिहास पठनीय है। वियतनाम के संस्कृत अभिलेखो के अनुसार चम्पा के प्रथम भारतीय राजा का नाम श्रीमार था। प्राचीन काल मे इस प्रदेश में जो भारतीय राज्य की स्थापना हुई, वो श्रीमार नामक व्यक्ति द्वारा की गई थी। तीसरी सदी के चौथे चरण मे चम्पा का राजा फन हिओंग थे। संभवत: यह कहा जा सकता है कि वह श्रीमार का ही वंशज था। फन हिओंग ने ही चीन के विरूद्ध युद्ध छेड दिया था, जो युद्ध दस साल तक चलता रहा। तत्पश्चात् 280 ई० में एक संधि हुई, संधि चम्पा के पक्ष मे थी। फन हिओंग के बाद उसका पुत्र फन-यी चम्पा के राज सिंहासन पर बैठा। इसके शासन काल मे चीन और चम्पा मे मैत्री पूर्वक संबंध रहे। इसके पूर्व चीन और चम्पा में हमेसा युद्ध छिड़ा रहता था। 336 ई० मे फन-यी की मृत्यु हो गई, और उसके बाद उसका सेनापति फन-वेन राजगद्दी

पर बैठा। वह एक बहुत ही शक्तिशाली एवं प्रतापी शासक था। चीन में एक दुतमंडल फन-यी द्वारा भेजा गया था। लेकिन इसके सिंहासन पर बैठते ही उसनें 340 ई० में अपने शासन काल में भी दुतमंडल चम्पा और चीन की सीमा को सुनिश्चित करने के लिए भेजा था। इसी क्रम में चीन के विरूद्ध हुए युद्ध में फन-वेन सेना के साथ लड़ते-लड़ते मारा गया।

फन वेन बाद उसका पुत्र फन फो (249-380)ई० राजसिंहासन पर बैठा, उसके बाद पौत्र फन हुआ-ता (380-415)ई० मे चम्पा के सिंहासन पर बैठा। इसके शासन-काल मे भी चम्पा और चीन में निरन्तर युद्ध जारी रहा। फन हुआ ता अत्यंत शक्तिशाली राजा था, उसके शासन काल मे चम्पा की शक्ति बहुत बढ़ गई थी। इसकी समता भद्रवर्मा की साथ को गई है। अभिलेखो से ज्ञात होता है कि जिस समय फन हुआ ता शासन कर रहा था उसी समय चम्पा पर भद्रवर्मा का शासन था। यह बात अभिलेखो से विदित होता है। वर्तमान समय के वियतनाम राज्य के प्राय: सभी प्रदेशो पर भद्रवर्मा का शासन था। इस राजा की ख्याति का प्रमुख कारण भद्रेश्वस्वामी शिव का मंदिर था, जिसे इसका निर्माण उसने माइसोन नामक स्थान पर कराया था।

गंगाराज- फनहुआ ता का उत्तराधिकारी उसका पुत्र ती-चेन था। इसके समय एक घटना घटित हुई, जिसमे उसके भाई ने उसकी माँ को किसी कारण वश चंपा से अन्यत्र कही ले कर चला गया, जिससे वह बहुत दुखी हुआ और अपना राज-काज अपने भतीजे को सौप दिया और स्वयं भारत चला गया। एक अभिलेख में यह बताया गया है कि गंगाराज नामक एक राजा अपने भतीजे को राज्य सौप दिया और जान्ह्वी के तट पर जा बसा। जिससे पता चलता है कि ती-चेन और अभिलेख का गंगाराज एक ही व्यक्ति था। इसके बाद फन भंग-माई राजा बना। इसके समय यहाँ पर आराजकता फैल गई क्योकि गंगाराज चंपा से चला गया था। इसके समय चीन के साथ युद्ध हुआ।

फन यंग-माई के बाद उसका पुत्र और पौत्र क्रमश: चम्पा के राजसिंहासन पर बैठा। पौत्र फन चेन-चेंग ने चीन से मैत्रीपूर्ण नीति का अनुसरण किया। इसके मृत्यु के बाद चम्पा के राज्य मे फिर अव्यवस्था उत्पन्न हो गई। इस मौका का लाभ उठाकर फूनान के राजा जयवर्मा का पुत्र, जिसे जघन्य अपराध के चलते जयवर्मा ने देश से बहिष्कृत कर दिया था। वही फन तांग-केन-चुएन ने चम्पा पर अधिकार कर लिया। यह ज्यादा देर तक शासन नही कर पाया और प्रपौत्र फन फू-नोंग ने उसको परास्त कर स्वयं राजसिंहासन पर बैठ गया। इनमे अंतिम शासक पि-त्सुए-प-मों(विजयवर्मा) था। विजयवर्मा के पश्चात् रूद्रवर्मा चम्पा का राजा बना जो गंगाराज का वंशज था।

**<u>गंगाराज के वंशजो का शासन</u> :-** विजयवर्मा के बाद रूद्रवर्मा चम्पा का राजा बना। इसका भी चीन के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध था। इसिलिए इसनें 529 और 534 ई० में अपना दूतमंडल चीन भेजा। रूद्रवर्मा का पुत्र प्रशस्तधर्म था, जो शम्भु वर्मा के नाम से चम्पा के राज-सिंहासन पर आरन्ढ़ हुआ। इसके समय में चीन की राजशक्ति निर्बल हो गई थी। शम्भुवर्मा के विषय में माइसोन के प्रकाश धर्म के अभिलेख से पता चलता है कि भद्रेश्वस्वामी शिव मंदिर का अग्नि द्वारा भस्म हो जाने पर शम्भुवर्मा ने उसका पुनर्निर्माण कराया। शम्भुवर्मा के मृत्यु के बाद उसका औरस पुत्र कंदर्पधर्मा चम्पा का राजा बना। इसके समय चम्पा का राज्य शान्ति पूर्वक था। इसके मृत्यु के पश्चात् ही चम्पा में गृह युद्ध प्रारंभ हो गया। गंगाराज के जिन वंशजो ने चम्पा पर शासन किया, उनमे रूद्रवर्मा द्वितीय अंतिम था। बीच में कुछ अन्य राजाओं ने भी शासन किया। रूद्रवर्मा द्वितीय 757 ई० तक चम्पा के राजसिंहासन पर विराजमान रहा, उसके साथ ही गंगाराज राजवंश का अन्त हो गया।

**<u>पाण्डुरंग वंश</u> :-** राजा रूद्रवर्मा द्वितीय के पश्चात् चम्पा राज्य पर एक नये राजवंश के हाथों मे शासन चला गया, जिसका प्रवर्तक पथ्वीन्द्रवर्मा था। इसके साथ ही चम्पा का राज्य उत्तरी क्षेत्र तक हो गया। 801 ई० के राजा इन्द्रवर्मा

के ग्लैलमोव अभिलेख में पथ्वीन्द्रवर्मा दो संपुर्ण चम्पा का स्वामी कहा गया है। 774 ई० मे पथ्वीनद्रवर्मा के मृत्यु के बाद सत्यवर्मा चम्पा का राजा बना। इसके शासन की प्रमुख घटना जावा की जल सेना द्वारा चम्पा राज्य पर आक्रमण कर वहाँ से एक शिवलिंग को उठा ले जाना तथा मंदिर को ध्वंश कर देना थी। इस घटना के बाद सत्यवर्मा ने मंदिर का पुन: संस्कार करा कर नवीन शिवमुखलिंग को प्रतिष्ठापित कराया। 785 ई० में इसकी मृत्यु हो गई।

सत्यवर्मा के पश्चात् उसका भाई इन्द्रवर्मा चम्पा का राजा बना। भद्राधिपतीश्वर शिव के मंदिर के भस्म होने के बाद इन्द्रवर्मा ने इसका पुन: निर्माण करा इन्द्रभद्रेश्वर नाम से शिव की एक नई मूर्ति प्रतिष्ठापित कराई। इन्द्रवर्मा परम प्रतापी के साथ-साथ धार्मिक तथा श्रद्धालु भी था। राजा इन्द्रवर्मा ने 801 ई० तक शासन किया। उसके बाद उसका बहनोई हरिवर्मा चम्पा का राजा बना। पो नगर से प्राप्त एक अभिलेख में हरिवर्मा द्वारा चीन को पराजित करने का उल्लेख है। अभिलेखो मे हरिवर्मा द्वारा दी गई दान-दक्षिणा का भी उल्लेख है। इसका शासन काल 820 ई० तक था। इसके पश्चात् विक्रांतवर्मा तृतीय चम्पा का राजा बना। वह पांडूरंग वंश का अंतिम शासक था।

**<u>भृगु वंश</u> :-** पांडुरंग वेश के पश्चात् नये राजवंश का उदय हुआ, जिसे मृगु वंश कहा जाता है। इस वंश का पहला राजा इन्द्रवर्मा द्वितीय था। शुरू मे इन्द्रवर्मा द्वितीय को 'श्री लम्मीचन्द्र भुमीश्वर ग्राम स्वामी' कहा जाता था बाद मे 'श्री जय इन्द्रवर्मा महाराजजाधिराज कहा जाने लगा। भृगु वंश मे इन्द्रवर्मा द्वितीय के बाद क्रमश: जयसिंह वर्मा, भद्रवर्मा तृतीय, इन्द्रवर्मा तृतीय ने शासन किया। इन्द्रवर्मा तृतीय ने 472 ई० तक चम्पा पर शासन किया। इसके बाद चम्पा मे अव्यवस्था का काल प्रारंम्भ हो गया इसके साथ ही अनाम के आक्रमण प्रारंभ हो गये।

इन्द्रवर्मा के पश्चात् परमेश्वरवर्मा 972 ई० में चम्पा का राजा बना। इसके शासन काल का प्रमुख घटना अनाम के साथ संघर्ष था। अनाम से युद्ध में परमेश्वरवर्मा मारा गया। इसके बाद इन्द्रवर्मा चतुर्थ, विजयश्री हरिवर्मा द्वितीय, क्रमश: शासक बने। हम देखते है कि हरिवर्मा द्वितीय के उत्तराधिकारियो ने कुछ समय तक शासन किया। लेकिन हरिवर्मा चतुर्थ के शासन काल में चम्पा मे एक नई शक्तित का संचार हुआ। हरिवर्मा चतुर्थ अभी 41 वर्ष का ही था कि वह राजसुख से वैराग्य हो गया और अपना शेष जीवन भगवान शिव की उपासना में व्यतीत किया। इसके पश्चात् जयइन्द्रवर्मा ने चार साल चंपा पर राज्य किया। जयइन्द्रवर्मा षष्ठ के समय कम्बुज देश और चम्पा में संघर्ष प्रारंभ हो गया। इसके शासन काल में चम्पा को अनेक युद्ध में फँसना पड़ा। 1145 ई० में चम्पा से उसके शासन का अंत हो गया। इसके बाद श्री जयहरिवर्मदेव षष्ठ, जयइन्द्रवर्मा सप्तम, श्री सुर्यवर्मदेव, जयपरमेश्वरवर्मा चतुर्थ, जयइन्द्रवर्मा(दशम), जयसिंह एकादश ने क्रमश: शासन किये।

बाहरहवीं-सदी के अंत में मंगोलो का उदय हुआ, जिसका प्रतिभाशाली नेता चंगेज खाँ था। जो बहुत ही बर्बर था। एक दुतमंडल कुबले खाँ की सेवा में भेज, चंपा के राज्य में हस्तक्षेप न करने के लिए इन्द्रवर्मा ने भेजा। जो चंगेज खाँ का पोता था। इस प्रकार इन्द्रवर्मा ने अपने देश की रक्षा मंगोलो से करने में सफल रहा। इन्द्रवर्मा के बाद जयसिंहवर्मा तृतीय मेहेन्द्रवर्मा क्रमश: शासक बने।

चंपा और अनाम के साथ अनेक संघर्ष हुए। अंततोगत्वा चम्पा का पतन हुआ और अनाम की विजय हुई। हम देखते है कि चम्पा का अंतिम राजा पो चोंग था जो अनाम की ज्यादतियो को नही सह सकने के कारण उसने कम्बुज मे जाकर शरण ली, और इस प्रकार चम्पा के प्राचीन भारतीय उपनिवेश की सत्ता का अन्त हुआ।